वैश्विक परिदृश्य में हिन्दी की लोकप्रियता के विविध आयाम

प्रो0 वीरेन्द्र सिंह यादव,

प्रोफेसर–हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषा विभाग,
डॉ0 शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय,लखनऊ,उ.प्र.

शोध सारांश

वैश्विक स्तर पर हिन्दी के विकास में भारतीय प्रवासियों एवं अप्रवासियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। मात्र भारत में ही प्रचलित हिन्दी भाषा को विश्व के कोने–कोने तक पहुँचाने का श्रेय उन्हें ही जाता है। अंग्रेजी शासन काल में भारतीयों को मजदूरी के लिये मजबूरी में विदेशों में भेजा गया था। हजारों लोग यात्रा के बीच ही मृत्यु को प्राप्त हो गए। शेष लोग वर्षों तक यातनाएँ, अपमान सहते हुए विदेशों में अपना एक छोटा समाज बनाया। इनमें भारत के सभी राज्यों से आये हुये विभिन्न भाषा–भाषी थे। लेकिन बहुमत हिन्दी भाषी होने से तथा हिन्दी की सरलता के कारण अन्य भाषा–भाषी भारतीय प्रवासी भी हिन्दी सीखने लगे। उन भयंकर यातनाओं का समय गुजर गया, लेकिन आज भी नौकरी पाने तथा जीवन–यापन करनें हेतु प्रवास को अपनानें वाले भारतीयों में बहुत संख्या में अनेक यातनाओं का सामना कर रहे हैं। इन परिस्थितियों में भारतीय हिन्दी भाषी प्रवासी समाज के लोग मिल–जुलकर इन पीड़ितों की सहायता करते रहते हैं। प्रवासियों के लिये हिन्दी मात्र भाषा ही नहीं, अपितु उन्हें अपने संवेदनाओं को व्यक्त करने तथा परिवार एवं देश से जुड़े रहने का माध्यम भी है।

बीज शब्द– *वैश्विक परिदृश्य,हिन्दी की लोकप्रियता,भारतीय, बाजारवाद।*

वर्तमान में न सिर्फ राष्ट्रभाषा, अपितु परिधान, खानपान, रहन सहन, जीवनशैली में मानसिक दासता प्रत्यक्ष झलकती है। सन् 1931 ई0 द्वितीय गोलमेज सम्मेलन में जहाँ भारतीय आदर्श, दृढ़ता एवं स्वाभिमान के जो दर्शन महात्मा गाधी जी में प्रस्फुटित हुए देश को अप्रितम ओज के संचार के स्रोत स्वरूप पूर्ण थे, किन्तु आज विदेशी आच्छादन में उस स्वाभिमान के स्पर्श भी दुर्लभ हैं। विदेशी भाषा एवं शैली को यहाँ आधुनिकता भी परिभाषित करने में नहीं चूकती, जबकि आधुनिकीकरण एवं पाश्चात्यीकरण स्पष्ट रूप से भिन्न है। आधुनिकीकरण ज्ञान विचार, आदर्श, अनुसंधान, विकास, सकारात्मकता,कर्मठता एवं रूढ़िवादिता के बंधनों को लाँधता हुआ सर्वे भवन्तु सुखिनः का उच्चादर्श है। अंगेजी के पक्षधर महात्मा गाँधी के सामने किसी सीमा तक दबे–दबे रहते थे, किन्तु राजनीतिक रंगमंच से उनके महाप्रस्थान के बाद हिन्दी के दुर्दिन आ गए। राजर्षि महापुरूषोत्तम दास टण्डन, सेठ गोविन्द दास, पं0 बालकृष्ण शर्मा, नवीन भैयासाहिब, पं0 श्री नारायण चतुर्वेदी प्रभूति हिन्दी सेवा महारथी जीवन के अन्तिम क्षणों तक हिन्दी की अस्मिता के रक्षार्थ लड़ते रहे। अंग्रेजी द्वारा की जाने वाली राष्ट्र की हानि के विरोध में 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में ही आवाज उठाई गई। श्री केशवचन्द सेन, महर्षि दयानंद सरस्वती, महारत्मा गाँधी, राजर्षि पुरूषोत्तम दास टण्डन, डॉ0 राम मनोहर लोहिया आदि देशभक्तों का एक स्वर से यही कहना था कि हमें अंगेजी भाषा की तरह भारतीय संस्कृति को दबाने वाली अंग्रेजी भाषा को यहाँ से बाहर करना चाहिए। हिन्दी सदैव भारत का गौरव रही है और हम स ब को मिलकर इसके विकास

हेतु समर्पित होना है। राष्ट्रकवि मैथली शरण गुप्त जी ने इसके लिए देश वासियों को आव्हान किया है। जिसको न निज गौरव न निज देश पर अभिमान है। वह नर नही नर–पशु निरा है और मृतक समान है।।

विश्व परिदृश्य में हिन्दी का बढ़ता दायरा– वर्तमान परिप्रेक्ष्य में हिन्दी विश्व के 170 देशों में किसी न किसी रूप में पढ़ाई और बोली जाती है। देश के बाहर 600 से ज्यादा हिन्दी विश्वविद्यालय और शोध संस्थान कार्य कर रहे हैं। मंडारिन,और अंग्रेजी के बाद दुनिया की तीसरी सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा हिन्दी है। नासा के भाषा विभाग प्रमुख डॉ0 ब्रिक्स के मुताबिक हिन्दी दुनिया की एकमात्र ध्वन्यात्मक (फोनेटिक) भाषा है। अनुमानता भविष्य में यह कम्प्यूटर की भाषा होगी। यह शुभ है कि संयुक्त राष्ट्र ने हिन्दी में समाचार सेवा भी शुरू कर दी है। यह सम्मान पाने वाली हिन्दी पहली गैर यू. एन. एशियाई भाषा बन गई है।

वैश्वीकरण के इस दौर में हिन्दी का मूल संसार संकुचित होता दिख रहा है। उदाहरण के तौर पर हम इन्टरनेट और एस0एम0एस0 पर भेजे जाने वाले संदेशों में रोमन के बढ़ते प्रभाव को देख सकते हैं। बाजारवाद के चलते हिन्दी का सम्प्रेषण मूलक रूप भी बहुत तेजी से बढ़ रहा है। यह वह हिन्दी है जो शुद्ध–अशुद्ध से परे है। इस भाषा में सुगमता लाने के लिए देशी–विदेशी सभी भाषाओं के शब्दों का मेल होते हुए दिखाई देता है। वैश्वीकरण के परिणाम स्वरूप अब जिस हिन्दी का प्रयोग किया जा रहा है उसका उद्देश्य मात्र सुगम संप्रेषण रह गया है। जिससे हिन्दी की संरचना बदल रही है। आज जिस हिन्दी का प्रचलन मीडिया,दूरदर्शन तथा जनमानस में हो रहा है उसके उदाहरण आम जीवन में देखे जा सकते हैं–

जिस देश का प्रभुत्व दुनिया में सबसे ज्यादा होगा। भाषा में उसी देश का प्रभुत्व होगा ती वहाँ की भाषा भी दुनियाँ सीखेगी। इतिहास और वर्तमान इस बात के साक्षी हैं कि शक्तिशाली लोगों की मातृ भाषा विश्व स्तर पर सीखी, बोली और लिखी जायेगी। और लिंग्बा फॉका बनेगी। लिंग्बा फॉका का अर्थ है– इस्तेमाल में ली जाने वाली वो सबसे प्रभावशाली भाषा है। इस पैमाने पर देखें तो बीते 3 हजार साल में ग्रीक, लैटिन ,पॉर्च्यगीज, स्पैनिश, फ्रैन्च और अंग्रेजी अलग–अलग दौर में प्रभावाली रही हैं। आज जो हिन्दी का प्रभुत्व बढ़ रहा है वो इसलिए है क्योंकि भारत का प्रभाव भी दुनियाँ में बढ़ रहा है। जैसे–जैसे यह बढ़ेगा, हिन्दी भी बढ़ेगी। हिन्दी लिंग्बा फॉका के तौर पर दुनिया में विस्तार पाये इसके लिए जरूरी है कि भारत को अपनी वित्तीय, सैन्य और तकनीकी ताकत को बढ़ाना होगा। अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध शिक्षा संस्थान ने अन्तर्राष्ट्रीय मामलों की पढ़ाई करने वाले छात्रों को पढ़ने के लिए पाँच भाषाएँ सुझाई हैं। इनमें हिन्दी भी है । संस्था का कहना है कि आबादी के लिहाज से भारत दुनिया का सबसे बड़ा देश है। यहाँ दो दर्जन से अधिक अधिकारिक भाषाएँ हैं। परन्तु हिन्दी लगभग सब जगह बोली जाती है और यह सबसे अधिक तेजी से बढ़ रही है।

भले ही किसी विदेशी खासकर अतिविशिष्ट विदेशी के द्वारा हिन्दी के चंद शब्द बोलने से हिन्दी को वैश्विक भाषा कहना अतिश्योक्ति हो सकता है, तो भी जब अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा हाल ही में भारत आकर अपने सम्बोधन में हिन्दी वाक्य बोलते हैं तो उसे कूटनीति के साथ–साथ हिन्दी के वैश्विक वर्चस्व का भी द्योतक माना जा सकता है। शायद यह कहना अनुचित न होगा कि आज भी भारत अन्य देशों की तुलना में अपनी भाषा को लेकर उतना तत्पर नहीं है जितना हिन्दी को वैश्विक भाषा बनाने के लिए जरूरी है। लेकिन सच यह भी है कि भारत की अनेक सरकारी अथवा सरकार से मदद प्राप्त संस्थाएँ हैं, जो विश्व के संदर्भ में हिन्दी के कदम बढ़ाने में गतिशील है। भारतीय

सांस्कृतिक संदर्भ परिषद, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय और महात्मा गाँधी हिन्दी अन्तर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय सहित अनेक भारतीय विश्वविद्यालय इस दिशा में अपनी–अपनी क्षमताओं और सीमाओं के अनुसार गतिशील हैं। आज अनेक देशों में हिन्दी की 'बसंत', 'पुरवाई' आदि पत्रिकाएँ लगातार निकल रही हैं और वे भी हिन्दी के बढ़ते कदमों में अच्छा योगदान कर रही है। ई–पत्रिकाएँ भी काफी निकल रही हैं जैसे प्रयास, अभिव्यक्ति, अनुभूति आदि।

आज पूरे विश्व में मूल भारतवंशी अथवा प्रवासी भारतीय हिन्दी की बढ़ोत्तरी में कई प्रकार से गतिशील हैं। वे साहित्य रच रहे हैं, जिसे भारत के विश्वविद्यालय तक अपने पाठ्यक्रमों में रखकर उन्हें प्रोत्साहित कर रहे हैं। अनेक संस्थाएँ उनके योगदान के लिए उन्हें पुरस्कृत कर रही हैं। इग्लैण्ड में तो गीतांजलि आदि अनेक संस्थाएँ हैं, वे निरन्तर हिन्दी सम्बन्धी कार्यक्रम करती रहती हैं। कम ही सही लेकिन बहुत से प्रवासी भारतीय ऐसे भी हैं जो विदेशी भाषाओं के माहौल में भी अपने बच्चे को हिन्दी पढ़ाने के लिए व्यवस्था करते नजर आते हैं । नये आकड़ों के हिसाब से यूरोप में हिन्दी सीखने वालों की संख्या तेजी से बढ़ी रही है। भारतीय संस्कृति, योग, शास्त्रीय संगीत और नृत्य को बेहतर तरीके से समझने के लिए यूरोप का एक बड़ा वर्ग हिन्दी प्रेमी बन रहा है, हिन्दी शिक्षण को लेकर भी कुछ प्रश्न हैं, जिन पर विचार हुआ है और हो भी रहा है। प्रश्न यह है कि हिन्दी के मानक भाषा रूप को पढ़ाया जाए अथवा बोलचाल के रूप को। अलग–अलग देशों में हिन्दी शिक्षण की पद्धति क्या हो? हिन्दी शिक्षण के लिए कुछ ऐसी सामग्री अवश्य विकसित करनी चाहिए, जो स्थानीय सन्दर्भों में मूलभूत कही जा सकती है–जैसे भारत और विभिन्न देशों के सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, लोककथात्मक सन्दर्भों को लेकर छोटे–छोटे निबन्धों तथा बाल कहानियों के संग्रह उपलब्ध कराये जाने चाहिए। संवादों के अभ्यास के लिए छोटे–छोटे नाटकों की व्यवस्था की जानी चाहिए। बातचीत में प्रयोग आने वाली सहज भारतीय अभिव्यक्ति मुद्राओं से भी नाटकीय ढंग से परिचित कराया जाना चाहिए। दोनों देशों के रीति रिवाजों, त्योहारों, वर्तमान परिदृश्यों आदि से सम्बद्ध सामग्री भी काफी उपयोगी सिद्ध हो सकती है। वैसे एक कुशल एवं निष्ठावान शिक्षक अपने कितने ही मौलिक ढंग ईजाद करके हिन्दी आसानी से सिखा सकता है।

हिन्दी के पाठकों की सरलता के लिए इस देश की राष्ट्रभाषा को हर दृष्टि से समृद्ध और सम्पन्न बनाना जरूरी है। हालाँकि इसका एक दूसरा पहलू यह भी है कि हिन्दी को केवल आयात की भाषा बनाने से काम नहीं चलेगा। बल्कि इसका ज्ञान और साहित्य विश्व की अन्य भाषाओं में अनूदित होना भी जरूरी है ताकि विश्व के समक्ष भारत की उपलब्धियों को रखा जा सके। इस कार्य में भी अप्रवासी भारतीय अपना सहयोग कर सकते हैं। हिन्दी प्रेमियों का यह उत्तरदायित्व भी है कि वे अपने ज्ञान, साहित्य, विचार आदि को सही ढंग से व्याख्यायित कर विश्व के सामने रखें। इसे सही ढंग से विवेचित करने का काम आधुनिक भाषा और राष्ट्रभाषा होने के नाते हिन्दी को करना होगा। भारत के बाहर विभिन्न देशों में बसे भारतीय किसी धर्म,जाति या भाषा के व्यक्ति नहीं केवल भारतीय हैं,जिनकी राष्ट्रभाषा एक है। जब तक यह भावना नहीं होगी वे अपने भीतर के भारत को बचा नहीं पायेगे एवं भारत के भीतर के द्वन्द्व को भारतीय स्वयं हल करेगें और हिन्दी को वैश्विक भाषा के पथ पर अग्रसर करेगे। इसमें कोई दो राय नही कि ग्लोबल होती दुनिया के सहयोग से हिन्दी विश्व में अपना परचम लहरा रही है और आगे भी इस यात्रा को जारी रखेगी।

आजादी के बाद संविधान सभा में भाषा के सवाल पर बड़ी महत्वपूर्ण एवं पेचीदा बहसें हुईं और अन्ततः उसे राजभाषा की हैसियत दे दी

गयी। हिन्दी के ज्यादातर समर्थकों ने उसकी इसी संवैधानिक हैसियत में उसका राष्ट्रभाषा हो जाना पढ़ लिया। यह माना गया कि संविधान की मुहर लग जाने के बाद अब हिन्दी का प्रभुत्व अन्तिम तौर पर वर्चस्व में बदल गया है। यह सोच किसी हिन्दी भाषी नागरिक के लिए दिवास्वप्न के समान थी। क्योंकि हिन्दी के प्रति संकुचित राजनीति अभी खत्म नहीं हुई थी बल्कि उसकी मुखरता अभी बाकी थी। कहने के लिए प्रतिवर्ष 14 सितम्बर को देश में हिन्दी दिवस मनाया जाता है। परन्तु गम्भीरता से सोचने की बात यह है कि सवा अरब के इस देश में कितने लोगों को मालूम है कि 14 सितम्बर को हिन्दी दिवस होता है। आम आदमी का उससे कोई लेना – देना नहीं होता। सरकारी दफ्तरों में भी वह वार्षिक बहस का मुद्दा बन गया है। जबकि सही अर्थों में हिन्दी दिवस का महत्व भारत के स्वतंत्रता दिवस से भी अधिक है। भारत को स्वतंत्रता तो मिल गई लेकिन स्वभाषा नहीं मिली । स्वभाषा के बिना स्वतंत्रता अधूरी है । देश के पास तंत्र तो आ गया , लेकिन इसमें स्व कहाँ है? भाषा की गुलामी से भी बड़ी कोई गुलामी होती है क्या ? भाषा के कारण मनुष्य पहचाना जाता है वरना मनुष्य और पशु में क्या अंतर होता है ? भारत का नागरिक मनुष्य की गरिमा में रहे , इसके लिए जरूरी है कि वह अपनी भाषा का प्रयोग करे। हर स्तर पर करे ,हर जगह करे, हर समय करे।

संयुक्त राष्ट्र के आठवें विश्व हिन्दी सम्मेलन में संयुक्त राष्ट्र महासचिव श्री बानकी मून ने 13 जुलाई सन् 2007 ई0 को राष्ट्र संघ के मुख्यालय में कहा था कि हिन्दी भाषा दुनिया भर के लोगों को पास लाने का काम कर रही है। यह ऐसी भाषा है जो दुनिया भर की संस्कृतियों के बीच एक सेतु का काम कर रही है। हमें यह कहते हुए गर्व है कि हिन्दी को अन्तर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में सर्वप्रथम प्रस्तुत करने का श्रेय मॉरिशस के पूर्व प्रधानमंत्री स्व0 डॉ0 शिवसागर रामगुलाम जी को है, जिन्होंने सन् 1975 ई0 में नागपुर में आयोजित प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन के अवसर पर अध्यक्ष पद से बोलते हुए कहा था। हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा तो है, लेकिन यह अन्तर्राष्ट्रीय भाषा भी है। मॉरीशस, सूरीनाम, गयाना, फीजी और अफ्रीका कई देश हिन्द का मान करते हैं। भारत की राष्ट्रभाषा को अन्तर्राष्ट्रीय भाषा बनाने में उनका बहुत हाथ है, और मॉरीशस संयुक्त राष्ट्र में हिन्दी साहित्य को उसका उचित स्थान दिलाने में सदैव आगे रहेगा।''

हिंदी विश्व के प्रायः सभी महत्त्वपूर्ण देशों के विश्वविद्यालयों में अध्ययन अध्यापन में भागीदार है। अकेले अमेरिका में ही लगभग एक सौ पचास से ज्यादा शैक्षणिक संस्थानों में हिंदी का पठन–पाठन हो रहा है। आज जब इक्कीसवीं सदी में वैश्वीकरण के दबावों के चलते विश्व की अधिकतर संस्कृतियाँ एवं भाषाएँ आदान –प्रदान व संवाद की प्रक्रिया से गुजर रही हैं तो हिंदी इस दिशा में विश्व मनुष्यता को निकट लाने के लिए सेतु का कार्य कर सकती है। उसके पास पहले से ही बहु सांस्कृतिक परिवेश में सक्रिय रहने का अनुभव है जिससे वह अपेक्षाकृत ज्यादा रचनात्मक भूमिका निभाने की स्थिति में है। हिंदी सिनेमा अपने संवादों एवं गीतों के कारण विश्व स्तर पर लोकप्रिय हुआ है। हिंदी सिनेमा ने सदा–सर्वदा से विश्वमन को जोड़ा है। हिंदी की मूल प्रकृति लोकतांत्रिक तथा रागात्मक संबंध निर्मित करने की रही है। वह विश्व के सबसे बडे लोकतंत्र की ही राष्ट्र भाषा नहीं है बल्कि पाकिस्तान, नेपाल, भूटान, बांग्लादेश, फिजी, मॉरीशस, गुयाना, त्रिनिदाद तथा सुरीनाम जैसे देशों की सम्पर्क भाषा भी है।

यदि निकट भविष्य में बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था निर्मित होती है और संयुक्त राष्ट्र संघ का लोकतांत्रिक ढंग से विस्तार करते हुए भारत को स्थायी प्रतिनिधित्व मिलता है तो हिन्दी यथाशीघ्र

इस शीर्ष विश्व संस्था की भाषा बन जाएगी। यदि ऐसा नहीं भी होता है तो भी हिन्दी बहुत शीघ्र वहाँ पहुँचेगी। वर्तमान समय भारत और हिंदी के तीव्र एवं सर्वोन्मुखी विकास का प्रतिनिधित्व कर रहा है और वह सब से यह अपेक्षा कर रहा है कि वह जहाँ भी हैं, जिस क्षेत्र में भी कार्यरत हैं वहाँ ईमानदारी से हिंदी और देश के विकास में हाथ बँटाएँ। निष्कर्ष यह है कि हिंदी विश्व भाषा बनने की दिशा में उत्तरोत्तर अग्रसर है। वह विश्व स्तर पर बहुत तेजी से प्रसार पा रही है।

गुणों तथा परिमाणों दृष्टि से देखें तो हिन्दी भाषा की समृद्धता उसके गुण और परिमाण दोनों ही दृष्टियों से उपयोगी हैं। हिंदी का काव्य साहित्य अपने वैविध्य एवं बहुस्तरीयता में संपूर्ण विश्व में संस्कृत काव्य को छोड़ कर सर्वोपरि है। "पद्मावत', "रामचरित मानस' तथा "कामायनी' जैसे महाकाव्य विश्व की किसी भी भाषा में नहीं हैं। वर्तमान समय में हिंदी का कथा साहित्य भी फ्रेंच, रूसी तथा अंग्रेजी के लगभग समकक्ष है। हाँ, इतना जरूर है कि जयशंकर प्रसाद को छोड़कर हिंदी के पास विश्वस्तरीय नाटककार नहीं हैं। इसकी क्षतिपूर्ति हिंदी सिनेमा द्वारा भलीभाँति होती है। वह देश की सभ्यता, संस्कृति तथा बदलते संदर्भों एवं अभिरुचियों की अभिव्यक्ति का बड़ा ही सफल माध्यम रहा है। आज हिंदी साहित्य की विविध विधाओं में जितने रचनाकार सृजन कर रहे हैं उतने बहुत सारी भाषाओं के बोलने वाले भी नहीं हैं। केवल संयुक्त राज्य अमेरिका में ही दो सौ से अधिक हिंदी साहित्यकार सक्रिय हैं जिनकी पुस्तकें छप चुकी हैं। अमेरिका में "विश्वा', 'हिंदी जगत' तथा श्रेष्ठतम वैज्ञानिक पत्रिका "विज्ञान प्रकाश' हिंदी की दीपशिखा को जलाए हुए हैं तो मॉरीशस से विश्व हिंदी समाचार, सौरभ, वसंत जैसी पत्रिकाएँ हिंदी के सार्वभौम विस्तार को प्रामाणिकता प्रदान कर रही हैं। संयुक्त अरब अमीरात से वेब पर प्रकाशित होने वाले हिंदी पत्रिकाएँ अभिव्यक्ति और अनुभूति पिछले ग्यारह से भी अधिक वर्षों से लोकमानस को तृप्त कर रही हैं और दिन पर दिन इनके पाठकों की संख्या बढ़ती ही जा रही है। आज हिंदी ई–सहचर,जनकृति,हस्ताक्षर जैसी सैकड़ों ई–पत्रिकाएँ अपनी वैश्विक उपलब्धता का उद्घोष कर रही हैं। अब हिंदी के अधिकांश समाचार पत्र भी गूगल पर ई–पेपर के रूप में उपस्थित हैं।

वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार देश की सवा अरब की जनसंख्या में लगभग 42 फीसदी की मातृ भाषा हिन्दी है। इससे भी बड़ी बात यह है कि प्रति चार व्यक्ति में तीन हिन्दी ही बोलते हैं। पूरी दुनिया का लेखा–जोखा किया जाए तो 80 करोड़ से ज्यादा हिन्दी बोलने वाले लोग हैं। तेजी से बदलती दुनिया का सामना करने के लिए भारत को एक सरल एवं सुगम भाषा की जरूरत है। सब जानते हैं कि अंग्रेजी दुनिया भर में बड़े तादाद की सम्पर्क भाषा है जबकि मातृभाषा के रूप में यह संकुचित है। चीन की भाषा मंदारिन सबसे बड़ी जनसंख्या को समेटे हुए है पर एक सच्चाई यह है कि चीन के बाहर इसका प्रभाव इतना नहीं है। जितना बाकी दुनियाँ में हिन्दी का है। पाकिस्तान, नेपाल, भूटान, बंग्लादेश, श्रीलंका से लेकर, इण्डोनेशिया, सिंगापुर यहां तक कि चीन में भी इसका प्रचार है। तमाम एशियाई देशों तक भी हिन्दी का बोलबाला ही नहीं, बल्कि ब्रिटेन, जर्मनी, दक्षिण–अफ्रीका, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड समेत मानचित्र के सभी महाद्वीपों जैसे अमेरिका एवं मध्य एशिया में इसका बोल–बाला है। इससे स्पष्ट है कि हिन्दी का विस्तार और प्रभाव भारत के अलावा भी दुनिया के कोने–कोने में है। हिन्दी के बढ़ते वैश्वीकरण के मूल में गाँधी की भाषा दृष्टि का महत्वपूर्ण स्थान है। दुनिया भर में गाँधी की स्वीकार्यता भी इस दिशा में काफी काम किया है। केन्द्रीय हिन्दी संस्थान भी विदेशों में हिन्दी के प्रचार–प्रसार व पाठ्यक्रमों के योगदान के लिए जानी समझी जाती है। हिन्दी में ज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विषयों पर सरल और उपयोगी पुस्तकों

का फिलहाल अभी अभाव है पर इस कदर भारत में व्यापार और बाजार का तकनीकी पक्ष उभरा है, इससे यह संकेत मिलता है कि उक्त के मामले में भी हिन्दी लगातार बढ़त बना रही है। दक्षिण भारत के विश्वविद्यालयों में हिन्दी विभागों की तादाद उत्तरोत्तर बढ़ रही है। पर यह भी सही है कि उत्तर दक्षिण का भाषाई विवाद अभी भी अपनी जंग लड़ रहा है।

प्रधानमंत्री मा0 मोदी जी के इस वक्तव्य के निहितार्थ को समझा जाए तो चिन्ता लाजमी प्रतीत होती है, स्वयं प्रधानमंत्री जी ने बीते पांच वर्षों से अधिक समय से विदेशों में अपने भाषण के दौरान हिन्दी का अधिक से अधिक प्रयोग किया है। शायद यह पहले प्रधानमंत्री हैं जिन्होंने संयुक्त राष्ट्र संघ में शामिल एक तिहाई देशों को हिन्दी को एक नई धारा दी है। जिसका तकाजा है कि हिन्दी के प्रति वैश्विक दृष्टिकोण लचीला हो गया है। यह सच है कि भाषा किसी भी संस्कृति का वह रूप है जिसके बगैर या तो वह पिछड़ जाती है या नष्ट हो जाती है इसे बचाने के लिए निरन्तर भाषा प्रवाह बनाये रखना बेहद जरूरी है।

दुनिया के देशों में हिन्दी सम्मेलन, हिन्दी दिवस और विदेशों में हिन्दी की स्वीकार्यता हिन्दी के प्रति भावना का महत्वपूर्ण प्रकटीकरण है। भारत सहित दुनिया में 14 सितम्बर हिन्दी दिवस के रूप में मनाया जाता है। यहाँ यह भी समझ लेना जरूरी है कि यदि हिन्दी ने दुनिया में अपनी जगह बनायी है तो अंग्रेजी जैसी भाषाओं से उसे व्यापक संघर्ष करना पड़ा है। विश्व तेजी से प्रगति की ओर है। विकसित समेत कई विकासशील देश अपनी भाषा के माध्यम से तेजी से आगे बढ़ रहे हैं। पर भारत में स्थिति थोड़ी उलटी है। यहाँ अंग्रेजी की जकड़ बढ़ रही है। रोचक यह भी है कि विदेशों में हिन्दी सराही जा रही है और अपने ही देश में तिरछी नजरों से देखी जा रही है। अंग्रेजी एक महत्वपूर्ण भाषा है पर इसका तात्पर्य यह नहीं कि इसे हिन्दी की चुनौती माना जाए या दूसरे शब्दों में हिन्दी को अंग्रेजी के सामने खड़ा करके उसे दूसरा दर्जा दिया जाए। प्रधानमंत्री मोदी जी का राजनीतिक और कूटनीतिक कदम चाहे जिस राह पर हो ,हमें इस बात को मानने से कोई गुरेज नहीं है कि हिन्दी विस्तार की दिशा में उनका कोई सानी नहीं है। फिलहाल हिन्दी भाषा में दुनिया के कोने–कोने से बढ़ते निवेश को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि हिन्दी धारा और विचारधारा के मामलों में मीलों आगे है।

संक्षेप में हिन्दी की वैश्विक स्थिति को डॉ0 सीताराम शास्त्री के शब्दों में कहें तो कहना होगा कि ''हिन्दी मात्र एक देश की भाषा नहीं, हिन्दी एक नए विश्व धर्म और अन्तर्राष्ट्रीय अनुशासन तथा मानवीय समरसता का सूत्रपात करने वाली भाषा है। हिन्दी की लोकप्रियता का औजार जहाँ इसके बोलने–समझने वालों की विशाल जनसंख्या, इसमें संप्रेषणीयता के अद्भुत गुणों की विद्यमानता, इसकी सरस, मीठी और लचीली प्रकृति और अन्य भाषाओं के शब्दों को सहजता से पचा लेने की इसकी क्षमता है। वहीं इसकी अधिकारिक लिपि देवनागरी भी है, जो एक प्रकार से इसके लिए वरदान है,क्योंकि नागरी लिपि विश्व की सबसे अधिक वैज्ञानिक और ध्वन्यात्मक लिपि है।

सन्दर्भ

1. मुले, गुणाकर शर्मा, सुभाष, मिश्र, देवेन्द्र (सं.), हिन्दी भाषा : विविध आयाम, साहित्य संसद, नई दिल्ली, 2006
2. Mangalam Kumar, S. Mohan, India's Languages Crisis An introductory study. New Century, Book House, Madras, 1965

3. दुबे मालती– वैश्विक परिपेक्ष्य में हिन्दी, पार्श्व प्रकाशन, अहमदाबाद,प्राक्कथन, 1992,1999
4. मलिक मोहम्मद, राष्ट्रभाषा विकास के विविध आयाम, प्रवीण प्रकाशन, नई दिल्ली, 2002
5. भट्ट मोहनलाल, (प्रकाशक), रजत जयंती ग्रंथ, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा, 1962
6. द्विवेदी महावीर प्रसाद, हिन्दी भाषा, वाणी प्राकशन, नई दिल्ली, 2003
7. दैनिक भास्कर (समाचार पत्र दिनांक 14 सितम्बर 2019) जबलपुर संस्करण
8. बाहरी डॉ0 हरदेव : हिन्दी भाषा,संस्करण 1994ई0, अभिव्यक्ति प्रकाशन, 847, विश्वविद्यालय मार्ग, इलाहाबाद
9. बाहरी डॉ0 हरदेव : शिक्षार्थी हिन्दी शब्दकोश, परिशिष्ट 1, राजपाल ऐण्ड सन्स, कश्मीरी गेट दिल्ली, सं0 1994ई0
10. आफताब आलम : द सण्डे इण्डिया, 30 मई 2010ई0
11. विनीत कुमार : नया ज्ञानोदय, मई 2010
12. प्रभाकर श्रोत्रिय : 'अन्यथा' जुलाई 2006
13. वागर्थ, दिसम्बर 2009
14. अक्षरा (पत्रिका) सितम्बर अक्टूबर 2015 म.प्र. राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, भोपाल
15. रचना (पत्रिका) 15 जुलाई 2015, हिन्दी ग्रन्थ अकादमी,भोपाल (म.प्र.)
16. पी.आर. निवास शास्त्री, कर्नाटक में हिन्दी प्रचार की गतिविधियाँ, कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति, बैंगलोर, 1998
17. शुक्ल आचार्य रामचन्द्र : हिन्दी साहित्य का इतिहास प्रकाशन संस्थान नई दिल्ली–110002, सं0 2015 ई0।
18. मोहम्मद डॉ0 मलिक : राजभाषा हिन्दी,प्रवीण प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली– 1100030, सं0 1993 ई0।
19. रचना (पत्रिका) मई जून 2018 हिन्दी ग्रन्थ अकादमी,भोपाल (म.प्र.)
20. एन. वेंकटेश्वर, संपादक, दक्षिण में हिन्दी प्रचार आन्दोलन का इतिहास, ऑफसेट डिविजन, 1994
21. शर्मा रामविलास– भाषा और समाज– राजकमल प्रकाशन, प्रा.लि. 1 बी नेता जी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली–110002, तीसरा संस्करण–1989
22. शर्मा रामविलास–ऐतिहासिक भाषा विज्ञान और हिन्दी भाषा–राजकमल प्रा.लि. 1 बी नेता जी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली–110002, प्र. सं.–2001
23. सांकृत्यायन राहुल–राष्ट्रभाषा हिन्दी–राधाकृष्ण प्रकाशन, जी–17, जगतपुरी दिल्ली–110051, प्र. संस्करण–2002, आवृत्ति–2004
24. मृगेश मणिक, राजभाषा की प्रवृतियाँ, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2006
25. द्विवेदी महावीर प्रसाद–हिन्दी भाषा –वाणी प्रकाशन–21 ए दरियागंज, नई दिल्ली 110002, संस्करण–1995
26. गोपी कृष्ण राठी, मधुकर, गोवर्धन शर्मा–राष्ट्रभाषा हिन्दी–रूपा बुक्स प्रा.लि. एस–12 शापिंक काम्पलेक्स तिलक नगर जयपुर–302004, प्र.सं.–1995